# दिव्यम्

## संस्कृत पाठमाला

7

# 1. वंदना

## ❐ अभ्यासकंठी

1. स्वयं कीजिए
2. (क) गौरं करुणावतारम्, संसारसारं भुजगेन्द्र, वसन्तं ह्दयारविन्दे, भवं भवानी सहितं
   (ख) भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु, भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दु:खभाग्
3. (क) भगवान शिव (ख) गूँगा (ग) साँपों का हार धारण करने वाला (घ) रोग रहित

❑

# 2. लौहपुरुष:

## ❐ अभ्यासकंठी

1. (क) गुजरात प्रदेशस्य नाडियाद (ख) नाडियाद (ग) बैरिस्टर
   (घ) आन्दोलनं (ङ) कारागृहं
2. (क) वि + हरति (ख) उत् + पतति
   (ग) प्र + सरति (घ) नि: + सरति
3. (क) महोदया: (ख) पिता (ग) आरब्धवती
   (घ) नीतवान् (ङ) नियुक्ति: (च) अध्यक्षा:
   (छ) महारानी (ज) दिवंगता
4.

| | शब्द: | विभक्ति | वचनम् |
|---|---|---|---|
| (क) | **वर्षे** | सप्तमी | एकवचन |
| (ख) | **आत्मनाम्** | षष्ठी | बहुवचन |
| (ग) | **एकस्मिन्** | सप्तमी | एकवचन |
| (घ) | **महोदयस्य** | षष्ठी | एकवचन |
| (ङ) | **स्वतन्त्रतायै** | चतुर्थी | एकवचन |

5. (क) (vi) (ख) (v) (ग) (i) (घ) (ii)
   (ङ) (iii) (च) (vii) (छ) (iv)
6. (क) **अर्थ**—गाँव
   **वाक्य-प्रयोग**—भारतवर्ष: ग्रामप्रधान: देश: अस्ति।
   (ख) **अर्थ**—किसान
   **वाक्य-प्रयोग**—विश्वनाथ: कृषक: अस्ति।
   (ग) **अर्थ**—पिता
   **वाक्य-प्रयोग**—मम् पिता आदर्श शिक्षक: अस्ति।

(घ) **अर्थ**—शिक्षा

**वाक्य-प्रयोग**—अध्यापक: शिक्षां प्रदाति।

(ङ) **अर्थ**—उपाधि या पदवी

**वाक्य-प्रयोग**—ब्रिटेन-देशं गत्वा बैरिस्टर इति उपाधिं प्राप्तवान्।

(च) **अर्थ**—परतन्त्र या गुलाम

**वाक्य-प्रयोग**—तदानीं काले देश: परतन्त्र आसीत्।

(छ) **अर्थ**—जेल

**वाक्य-प्रयोग**—देशस्य स्वतन्त्रतायै स: बहुवारं कारागृहं गतवान्।

**7.** (क) वल्लभभाई पटेल महोदयस्य जन्म 1875 तमे ईसवीये वर्षे अक्टूबर-मासस्य 31 दिनाङ्के गुजरातप्रदेशस्य नाडियाद ग्रामे अभवत्।

(ख) वल्लभभाई पटेल महोदयस्य पितु: नाम झवेरभाई पटेल: मातु: च नाम लाडबा आसीत्।

(ग) स: 'बैरिस्टर' इति उपाधिं ब्रिटेन-देशं।

(घ) कृषकाणां करमुक्तिहेतो: गान्धीमहोदयस्य नेतृत्वे सञ्चालिते सत्याग्रह-आन्दोलने वल्लभभाई पटेलोऽपि आत्मनां समर्पितवान्।

(ङ) जना: पटेल-महोदयं 'सरदार' इति उपाधिना सम्मानितवन्त:।

**8.** (क) पटेलस्य जन्म गुजरातप्रदेशस्य नाडियाद ग्रामे अभवत्।

(ख) पटेल: ब्रिटेनदेशं गत्वा बैरिस्टर उपाधिं प्राप्तवान्।

(ग) स: कृषकाणां करमुक्तिहेतो: आन्दोलने-आत्मनां समर्पितवान्।

(घ) पटेल: भारतस्य प्रथम: उप-प्रधानमन्त्री अभवत्।

(ङ) तस्य निधन दिसम्बर मासस्य 15 दिनाङ्के 1950 तमे वर्षे मुम्बईनगरे अभवत्।

❑

# 3. दुर्बुद्धि: विनश्यति

## ❑ अभ्यासकंठी

**1.** (क) (अ) मगधराज्ये (ख) (ब) कम्बुग्रीव: (ग) (स) धीवरा:
(घ) (ब) काष्ठदण्डम् (ङ) (अ) गोपालका:

**2.** (क) क + अ + म् + ब् + उ + ग् + र् + ई + व् + अ + न् + आ + म् + आ + म्

(ख) म् + अ + त् + स् + य् + अ + क् + ऊ + र् + म् + आ + द् + ई + न्

(ग) आ + क् + आ + श् + अ + य् + आ + र् + ग् + ए + ण् + अ

(घ) क् + आ + ष् + ठ् + अ + द् + अ + ण् + ड् + अ + म् + अ + ध् + य् + ए

(ङ) भ् + अ + क्ष् + अ + य + इ + ष् + य् + आ + म् + ई

**3.** (क) फुल्ल + उत्पल (ख) अपाय: + अपि
(ग) उत् + डीयते (घ) सर: + तीरे
(ङ) न + अभिनन्दति

**4.** (क) मित्रम् (ख) हत: (ग) शुभचिन्तकानां
(घ) नभमार्गेण (ङ) दृष्ट्वा (च) तडागस्थ तटे
(छ) श्रुत्वा (ज) अस्मिन् समये

**5.** घटनाक्रमानुसार क्रमेण
(ग) → (घ) → (ज) → (ङ) → (क) → (च) → (ख) → (छ)

**6.** (क) कम्बुग्रीव (ख) धीवरा: (ग) आकाशमार्गेण
(घ) गोपालका: (ङ) धीवराणां (च) कूर्म:

**7.** (क) कच्छप: अन्यत्र ह्रदम् गन्तुम् इच्छति।
(ख) कूर्म: मित्राभ्यां दत्तं वचनं विस्मृत्य कोपेन अवदत्—'यूयं भस्म खादत।''
(ग) सङ्कटविकटयो: मित्रम् हंसौ आसीत्।
(घ) धीवरा: अकथयन—''वयं श्व: मत्स्यकूर्मादीन् मारयिष्याम:।
(ङ) यदि कच्छप: जनानां वचनं प्रति प्रतिक्रियां करोति तर्हि कच्छपस्य मरणं निश्चितं भवति।
(च) हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि उड्डीयते।

**8.** (क) मगधराज्ये एकस्मिन् सरसि हंसौ निवसत:।
(ख) गोपालकानां वचनं श्रुत्वा कूर्म: मित्रेभ्य: दतं वचनं विस्मृतवान्।
(ग) यद्ययं कूर्म: निपतति तदा अत्रैव पक्त्वा खादिष्यामि।
(घ) किमहं मूर्ख:? न, अहम् उतरं न दास्यामि। अहम् किञ्चिदपि न वदिष्यामि।
(ङ) अहम् युवाभ्यां सह आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि।

❑

# 4. लोमशिकाया: चातुर्यम्

## ❑ अभ्यासकंठी

**1.** (क) (ब) न हनिष्यामि (ख) (अ) व्याध: (ग) (ब) वृक्षम्
(घ) (स) धर्मम् (ङ) (अ) प्राणान्

**2.** (क) पलायनं (ख) जालं (ग) कूर्दनं
(घ) व्याघ्रं (ङ) पापे

**3.** (क) बुभुक्षितोऽस्मि (ख) कुत्रापि (ग) तथैव
(घ) मृगादीनाम्

**4.** (क) → (iii) (ख) → (iv) (ग) → (v) (घ) → (i) (ङ) → (ii)

**5.** (क) चञ्चल ने बाघ से (ख) बाघ ने शिकारी से
(ग) बाघ ने शिकारी से (घ) लोमड़ी ने शिकारी से

6. (क) चञ्चल व्याघ्र: वने दृष्टवान्।
   (ख) व्याधस्य नाम चञ्चल आसीत्।
   (ग) अनवरतं कूर्दनेन व्याघ्र: श्रान्त: अभवत्।
   (घ) व्याघ्र: जलं पीत्वा व्याधम् अवदत्, ''शांता मे पिपासा साम्प्रतं बुभुक्षितोऽस्मि। इदानीं अहं त्वां खादिष्यामि।''
   (ङ) बदरी-गुल्यानां पृष्ठे लोमशिका निलीना आसीत्।
7. स्वयं कीजिए।

❑

# 5. मातृ:-पितृभक्त:

## ❑ अभ्यासकंठी

1. (क) (ब) त्रेतायुगे (ख) (स) श्रवण कुमार: (ग) (अ) बाणेन
2. (क) किमपि (ख) शापमददात् (ग) निर्दोष:
   (घ) बाणमिदम (ङ) बाणमक्षिपत् (च) सृष्टिकाल:
3. (क) **अर्थ**—प्यासे
   **वाक्य-प्रयोग**—आवां पिपासितौ स्व:।
   (ख) **अर्थ**—मरना
   **वाक्य-प्रयोग**—स्वपुत्रस्य मरणं श्रुत्वा तथा च मरणस्य कारणं ज्ञात्वा दु:खित: अभवत्।
   (ग) **अर्थ**—अपराधी के समान
   **वाक्य-प्रयोग**—राजा अपराधिनमवि अवोचत्—''क्षम्यताम्।''
   (घ) **अर्थ**—चार भागों में
   **वाक्य-प्रयोग**—सम्पूर्ण: सृष्टिकाल: चतुर्भागेषु विभक्त: अस्ति।
   (ङ) **अर्थ**—दोनों वृद्ध
   **वाक्य-प्रयोग**—तत: तौ वृद्धौ स्वर्गंप्रति तत्क्षणैव अगच्छताम्।
4. (क) सम्पूर्ण: सृष्टि: चतुर्भागेषु विभक्त: अस्ति।
   (ख) श्रवणकुमार: मातृ-पितृ सेवां करोति स्म।
   (ग) सरयूनद्या: तटे गच्छन् सुरभ्य वायुं प्राप्य सरयू नद्यास्तरंगध्वनिम् आकर्ण्य तौ पितरौ ज्ञायताम् यत् समीपस्थ: काऽपि नदी अस्ति।
   (घ) दशरथ: अयोध्याया: राजा आसीत्।
   (ङ) राज्ञ: पदचापं श्रुत्वा श्रवणस्य पितरौ अवदताम्—''पुत्र! कथं विलम्बेन आगत:?''
5. (क) सम्पूर्ण: संसार: चतुर्भागेषु विभक्त: अस्ति।
   (ख) त्रेतायुगे मातृ-पितृभक्त: एक: बालक: आसीत्।

(ग) आज्ञां प्राप्य श्रवणकुमारः जलम् आनेतुं नदीम् अगच्छत्।
(घ) दशरथः अयोध्यायाः राजा आसीत्।
(ङ) वाणीं श्रुत्वा दशरथः शब्दभेदिनं बाणम् अक्षिपत्वान।

6. (क) इस समय कलियुग है।
(ख) श्रवण कुमार उन दोनों की छाया की भाँति सेवा करता था।
(ग) वे दोनों इस प्रकार के पुत्र को प्राप्त करके प्रसन्न थे।
(घ) यह सुनकर श्रवण कुमार उन दोनों को अपने कन्धों से तीर्थ स्थान ले गया।
(ङ) अनजाने में बाण से आपका निर्दोष पुत्र मर गया है।

❑

# 6. अङ्गुलिमालः

## ❒ अभ्यासकंठी

1. (क) (अ) कोसलदेशे (ख) (ब) अङ्गुलिमालः (ग) (स) दुःखिता
(घ) (ब) बुद्धस्य

2. (क) लुण्ठनं (ख) अङ्गुलिमालः (ग) प्रजाः
(घ) ज्ञानं (ङ) अहिंसायाः

3. (क) → (iii) (ख) → (iv) (ग) → (v) (घ) → (i) (ङ) → (ii)

4. (क) नालभत् (ख) अज्ञानान्धकारः
(ग) करुणार्द्रभावं (घ) विजयोऽभवत्
(ङ) दुष्कृत्यैः (च) धर्ममुपदिष्टम्

5.

| | विभक्ति | वचन |
|---|---|---|
| (क) | सप्तमी | एकवचन |
| (ख) | षष्ठी | बहुवचन |
| (ग) | षष्ठी | एकवचन |
| (घ) | चतुर्थी | एकवचन |
| (ङ) | पञ्चमी | एकवचन |

6. (क) **अर्थ**—बुरे कार्य
**वाक्य-प्रयोग**—लोकानां लुण्ठनं दुष्कृत्यः अस्ति।
(ख) **अर्थ**—डाकू
**वाक्य-प्रयोग**—एकः भीषणः दस्युः अवसत्।
(ग) **अर्थ**—खतरनाक या भयानक
**वाक्य-प्रयोग**—अङ्गुलिमालः एकः भीषणः दस्युः आसीत्।
(घ) **अर्थ**—अहिंसा
**वाक्य-प्रयोग**—हिंसायाम् अहिंसायाः एव विजयोऽभवत्।

7. (क) कोसलदेशे एक: भीषण: दस्यु: अवसत्।
(ख) अङ्गुलिमाल: ये जना: हन्ति स्म, तेषाम् अङ्गुली: छित्वा ताभि: मालां विरच्य कण्ठे धारयति स्म। अत: तस्य अङ्गुलिमाल: इति ख्याति: जाता।
(ग) राजाप्रसेनजित: अङ्गुलिमालस्य दृष्कृत्यै: दु:खितोऽभवत्।
(घ) बुद्धस्य उपदेश प्रभावाद् अङ्गुलिमालस्य अज्ञानान्धकार: नष्ट:।
(ङ) हिंसायाम् अहिंसाया: एव विजयोऽभवत्।

8. (क) अङ्गुलिमाल: कोसलदेशे अवसत्।
(ख) अङ्गुलिमाल: एक: भीषण: दस्यु: आसीत्।
(ग) राजा अङ्गुलिमालस्य निग्रहणे बहु: प्रायतत्।
(घ) भगवान् बुद्ध: अङ्गुलिमालंस्य अहिंसाया:।

9. (क) उसका नाम अंगुलिमाल था।
(ख) राजा ने उसको पकड़ने के बहुत प्रयास किये।
(ग) बुद्ध के दयालु भाव को देखकर वह चकित हो गया।
(घ) इस प्रकार हिंसा पर अहिंसा की विजय हुई।

❑

# 7. सुभाषितानि

## ❒ अभ्यासकंठी

1. (क) विद्वत्वं **च नृपत्वं च नैवतुल्यं कदाचन।**
**स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र** पूज्यते।।
(ख) अधमा: **धनमिच्छन्ति, धनं मानं च मध्यमा**।
**उत्तमा: मानमिच्छन्ति, मानो हि महतां** धनम्।।
(ग) प्रिय वाक्य **प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति मानवा:**।
**तस्मात् तदेव वक्तव्यम्, वचने का** दरिद्रता।।

2. (क) सर्वत्र: विद्वान् पूज्यते। (ख) स्वदेशे राजा पूज्यते।
(ग) फलिनोवृक्षा: गुणिनो जना: च नमन्ति।
(घ) मक्षिका: व्रणमिच्छन्ति।

3. (क) राजा स्वदेशे पूज्यते।
(ख) शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाजन।
(ग) अधमा: धनमिच्छन्ति।
(घ) राजान: धनं मानं च इच्छन्ति।

4. (क) मक्खियाँ घाव चाहती हैं, राजा लोग धन की इच्छा करते हैं, नीच लोग झगड़ा चाहते हैं तथा सज्जन पुरुष शान्ति चाहते हैं।
(ख) फल आने पर वृक्ष तथा गुणवान पुरुष झुक जाते हैं। सूखे हुए वृक्ष तथा मूर्ख लोग कभी नहीं झुकते हैं।

❑

# 8. वृक्षाः जीवनस्य आधाराः

## ❐ अभ्यासकंठी

1. (क) (ब) तुलसी (ख) (स) फलानि (ग) (स) विटामिन-सी
   (घ) (अ) भोज्य पदार्थाः
2. (क) वृक्षाः (ख) ओषजनं (ग) तुलसी (घ) बिल्ववृक्षः
   (ङ) अमृतवृक्षः (च) पत्राणाम्, पुष्पाणाम् औषधीनां
3. (क) → (v) (ख) → (i) (ग) → (iv) (घ) → (ii) (ङ) → (iii)
4. (क) → (v) (ख) → (iii) (ग) → (ii) (घ) → (iv) (ङ) → (i)
5.

| | **विभक्तिः** | **वचनम्** |
|---|---|---|
| (क) | तृतीया | एकवचन |
| (ख) | सप्तमी | एकवचन |
| (ग) | प्रथमा | एकवचन |
| (घ) | षष्ठी | बहुवचन |
| (ङ) | तृतीया | बहुवचन |

6. (क) वृक्षेषु अन्यतमः अश्वत्थनाम्नः वृक्षः दिवानक्तम् ओषजनं त्यजति।
   (ख) कदलीवृक्षः द्वादशमासपर्यन्तं फलति।
   (ग) तुलसीपादपानाम् आरोपणेन ताजमहलभवनस्य सौन्दर्य-संरक्षणं क्रियते।
   (घ) आमलकवृक्षस्य अपरनाम अमृतवृक्षः अस्ति।
   (ङ) चिकित्साशास्त्रे सर्वोपयोगी वृक्षः बिल्ववृक्षः अस्ति।
7. (क) जनाः कस्य पक्वानि अपक्वानि वा फलानि खादन्ति।
   (ख) बिल्वस्य फलानि केषाम् उपशामयन्ति।
   (ग) आमलक-फलानां सेवनेन किं वर्धते।
   (घ) वृक्षाः कस्य आगाराः सन्ति।
   (ङ) वृक्षाः केभ्य अन्नवस्त्राणि यच्छन्ति।
8. स्वयं कीजिए।

❑

# 9. सर्वोत्तमः वृक्षः

## ❐ अभ्यासकंठी

1. (क) रत्नानि (ख) जीवनं (ग) द्वौ (घ) विशालाकाराः
   (ङ) वातावरणं (च) नीडं (छ) दानशीलेभ्यः
2. (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✓)
   (ङ) (✓) (च) (✗)

3.

| | विभक्ति | वचनम् |
|---|---|---|
| (क) मधुमक्षिका: | प्रथमा | बहुवचन |
| (ख) वृक्षस्य | षष्ठी | एकवचन |
| (ग) खगा: | प्रथमा | बहुवचन |
| (घ) वृक्षेषु | सप्तमी | बहुवचन |

4. (क) वटवृक्ष: अस्मभ्यं छाया यच्छति।
   (ख) केचित् वृक्षा: फलवन्त: भवन्ति।
   (ग) पृथिव्याम् अनेकानि रत्नानि सन्ति।
   (घ) केचित् केवलं छायाप्रदा: वृक्षा: सन्ति।
   (ङ) बालिका: शोभनम् संस्कृतं पठन्ति।
5. (क) अनेकेषु रत्नेषु वृक्ष: सर्वोत्तम: अस्ति।
   (ख) संस्कृतभाषायां वृक्षस्य अनेका: पर्याया: सन्ति, यथा—तरु:, पादप:, द्रुम:, विटप:, शाखिन्।
   (ग) वृक्षस्य मुख्यत: द्वौ प्रकारौ स्त:। केचित् फलवन्त: वृक्षा: केचित् च केवलं पुष्पिता: एवं छायाप्रदा: भवन्ति।
   (घ) वृक्ष: कार्बनं अवशोषयति ओषजनं च ददाति।
   (ङ) केचित् केवलं छायाप्रदा: वृक्षा: सन्ति; यथा—पिप्पलवृक्षा:, पारिजातवृक्षा:, वटवृक्षा:, शिंशपवृक्षा:, देवदार वृक्षा: इत्यादय:।
6. (क) वृक्ष हमें विविध प्रकार के फल देते हैं।
   (ख) वृक्ष कार्बन को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन देते हैं।
   (ग) इनमें कुछ वृक्ष विशालकाय होते हैं।
   (घ) ये वृक्ष धूप को हरकर शीतलता देते हैं।
   (ङ) मधुमक्खियाँ पुष्परस पीती हैं।
   (च) ऐसे दानशील वृक्षों को नमस्ते।

❑

# 10. पुन: मूषक: भव

## ❑ अभ्यासकंठी

1. (क) (अ) योगसिद्ध मुनि:    (ख) (स) विडालम्    (ग) (स) व्याघ्र
2. (क) व्याघ्र:    (ख) उपकारं    (ग) एकदा विडालात्
   (घ) क्रोडं
3. (क) कस्य + अपि    (ख) इति + अर्थम्
   (ग) सदा + एव
4. (क) आश्रमे एक: योगसिद्ध: मुनि: वसति स्म।
   (ख) मूषक: विडालात् भीत: मुने: क्रोडं समाश्रयत्।

(ग) व्यांघ्रातं भीत: श्वा: वने इतस्तत: अधावत्।

(घ) व्याघ्र: भूत्वा श्वा: अचिन्तयत्—''यावत् अयं योगसिद्ध: मुनि जीवति, तावत् एष: प्रवाद: दुर्निवार: अस्ति। अत: एनं मुनिम् एव भक्ष्यामि।''

5. (क) मूषक: मुने: क्रोडं समाश्रयत्।
   (ख) मुनि: मूषकं विडालम् अकरोत।
   (ग) मूषक: इतस्तत: धावत स्म।

❑

# 11. पलक मुछाल:

## ❒ अभ्यासकंठी

1. (क) (अ) इंदौर (ख) (स) द्वाऽपि सत्यम्
   (ग) (ब) गायनम् (घ) (स) पञ्चशतम्
   (ङ) (अ) टिप्प्स
2. (क) भ्राता (ख) गायने (ग) देवदूतिका
   (घ) नेत्रहीनेभ्य:, च हृद्रोगिभ्य: (ङ) देवदूतिकाया
3. (क) संयोगम् + इव (ख) इति + एवम्
   (ग) सत्यम + अस्ति (घ) महामण्डल + ईश्वर:
   (ङ) इति + एताभ्याम् (च) दीर्घ: + आयुषी:
4.

| | विभक्ति | वचनम् |
|---|---|---|
| (क) | पंचमी | एकवचन |
| (ख) | सप्तमी | एकवचन |
| (ग) | चतुर्थी | एकवचन |
| (घ) | तृतीया | एकवचन |
| (ङ) | सम्बोधन | एकवचन |

5. (क) $\rightarrow$ (iii) ख $\rightarrow$ (iv) (ग) $\rightarrow$ (v) (घ) $\rightarrow$ (i) (ङ) $\rightarrow$ (ii)
6. (क) **अर्थ**—नगर से
   **वाक्य-प्रयोग**—अस्मात् नगरात् ग्राम: अतिदूरम्।
   (ख) **अर्थ**—झरना
   **वाक्य-प्रयोग**—इयं निर्झरी न केवलं भारतम् अपितु सुदूरान् विदेशान् अपि आप्लखितं करोति।
   (ग) **अर्थ**—कोयल का स्वर
   **वाक्य-प्रयोग**—लता मंगेशकर: स्वर-कोकिला: इति कथ्यते।
   (घ) **अर्थ**—कल्याण के लिए
   **वाक्य-प्रयोग**—बालरोगी कल्याणाय स्वकाकलीविनन्दकं कलकण्ठं प्रद्दात्।

(ङ) **अर्थ**—जाकर

**वाक्य-प्रयोग**—छात्र: विद्यालयं गत्वा पठति।

**7.** (क) इन्दौर नगरात्  (ख) एक:

(ग) 2.5 कोटि:  (घ) लिटिल स्टार्स ग्रुप

**8.** (क) पलक: मुछाल: इंदौर नगरे वसति।

(ख) तिस्र: वर्षात् पलक: मुछाल: यञ्चे गायनं करोति।

(ग) पलक मुछाल: श्रेष्ठे संगीतसमारोहे आहूता भवति।

(घ) गायन कार्यक्रमेण सा यत्किञ्चित् धनं प्राप्तनोति सर्वं चिकित्साकार्याय दानं करोति।

(ङ) 'मानव-संसाधन विकास मन्त्रालय:' 'महिला एवं बाल विकास विभाग:' च पलक मुछाल: राष्ट्रिय बाल पुरस्कारेण सम्मानित:।

**9.** (क) पलक मुछाल: इन्दौर-नगरे निवसति।

(ख) पलक मुछालस्य सुखी परिवार: अस्ति।

(ग) सा त्रिवर्षात् आरभ्य गीतानि गायति।

(घ) सा अतीव दयालु: अस्ति।

(ङ) सा सम्पूर्णे विश्वे प्रसिद्ध: अस्ति।

**10.** (क) उसका नाम पलक मुछाल है।

(ख) उसका छोटा सुखी परिवार है।

(ग) गायन में वह अति कुशल है।

(घ) वह अल्प वयस्क गायिका है—पलक मुछाल।

(ङ) उन्होंने अपने मधुर स्वर से गाया।

❑

# 12. लोकमान्य: तिलक:

## ❐ अभ्यासकंठी

**1.** (क) (अ) तिलक:  (ख) (ब) महाराष्ट्र राज्यस्य

(ग) (स) जननी  (घ) (ब) शिक्षणकार्यम्

**2.** (क) जन्मसिद्ध:  (ख) शिक्षक:  (ग) जननी

(घ) परिश्रमेण  (ङ) जना:

**3.** (क) → (iii) (ख) → (iv) (ग) → (v) (घ) → (i) (ङ) → (ii)

**4.** (क) (✗) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✓) (ङ) (✗)

**5.**

| | विभक्ति | वचन |
|---|---|---|
| (क) | षष्ठी | एकवचन |
| (ख) | द्वितीया | बहुवचन |

| | | |
|---|---|---|
| (ग) | प्रथमा | द्विवचन |
| (घ) | तृतीया | द्विवचन |
| (ङ) | सप्तमी | एकवचन |

**6.**

| | **वचन** | **पुरुष** | **लकार** |
|---|---|---|---|
| (क) | एकवचन | प्रथम | लङ्लकार |
| (ख) | एकवचन | प्रथम | लङ्लकार |
| (ग) | एकवचन | प्रथम | लङ्लकार |
| (घ) | एकवचन | प्रथम | लङ्लकार |
| (ङ) | बहुवचन | प्रथम | लङ्लकार |

**7.** (क) तिलक: राष्ट्रस्य वस्तुत: तिलक: आसीत्।
(ख) तिलकस्य जन्म महाराष्ट्र राज्यस्य एक: ग्रामे अभवत्।
(ग) तिलक: बाल्यकाल: कष्टेन व्यतीतवान्।
(घ) स्वतन्त्रता: अस्माकं जन्मसिद्ध: अधिकार:।
(ङ) स: बहुवारं कारागारं गत:।

**8.** (क) तिलकस्य जन्म महाराष्ट्रराज्यस्य चिरबल नामके ग्रामे अभवत्।
(ख) तिलकस्य बाल्यकाल: सुखेन न व्यतीत:।
(ग) तिलक: अस्मान् स्वतन्त्रताया: पाठम् अपाठयत्।
(घ) तिलकस्य जनक: रामचन्द्र गंगाधर राव: एक: कुशल: शिक्षक: आसीत्।
(ङ) यदा वैदेशिकानां भयेन कोऽपि स्वतन्त्रताया: शब्दोच्चारणम् अपि न अकरोत् तदा तिलक: निर्भीकभावेन स्वविचारान् प्रकाशयत्।

❑

# 13. कर्कट: वकाश्च

## ❑ अभ्यासकंठी

**1.** (क) वका: (ख) वकशावकान् (ग) सहजशत्रु: (घ) तदनुसारमेव
(ङ) वृक्षाश्रितान्

**2.** (क) तत्र + एव (ख) वृक्ष + आश्रितवान्
(ग) एक + अस्मिन् (घ) तद् + अनुसारम्
(ङ) कस्य + अर्थम्

**3.** (क) कुमार्ग: (ख) निर्जल (ग) मरू (घ) वयस्क:

**4.** (क) वने एक: विशाल: वटवृक्षस्य उपरि बहव: वका: निवसन्ति स्म।
(ख) एकदा सर्प: वकशावकान् भक्षितवान्। शिशु-वैरग्यात् वका: रोदनं कुर्वन्ति स्म।
(ग) कर्कटेन वकान् उपायम् उक्तवान्, ''मत्स्यानां मांसखण्डानि नकुलस्य बिलद्वारात् सर्पकोटरं यावत् स्थापयन्तु। येन नकुल: तेन मार्गेण गत्वा तं दुष्टसर्पं विनाशयिष्यति।

(घ) वकमूर्खस्य कारणात् वका: मृत्युं प्राप्तवन्त:।
(ङ) अस्या कथया अस्मान् तत् शिक्षा प्राप्नोति-
उपायं चिन्तयेत् प्राज्ञस्तथापायं च चिन्तयेत्।

**5.** (क) **अर्थ**—पेड़ का खोखला भाग
**वाक्य-प्रयोग**—तस्य मध्ये जलोपान्ते रम्यतरं कोटरम् अस्ति।
(ख) **अर्थ**—बगुले
**वाक्य-प्रयोग**—वका: तदनुसारमेव कार्यं कृतवन्त:।
(ग) **अर्थ**—नेवला
**वाक्य-प्रयोग**—नकुल: तेन मार्गेण गत्वा तं दुष्ट सर्पं विनाशयिष्यति।
(घ) **अर्थ**—मछली
**वाक्य-प्रयोग**—मीन: जले एव जीवति।
(ङ) **अर्थ**—वहीं पर
**वाक्य-प्रयोग**—अहं तत्रैव आसं यत्र त्वम् अतिष्ठ:।

**6.** (क) केचन् वका: स्व-शावकाभि: सह विशाले वृक्षे निवसन्ति स्म।
(ख) एक: सर्प तेषां शावकान् भक्षितवान्।
(ग) कर्कट: वैरभावात् वकाभ्य: गलतं समाधानं अवदत्।
(घ) मूर्ख: वका: कर्कटस्य वचनं न अवगन्तुं शक्तवन्त:।
(ङ) फलत: नकुल: तान् सर्वान् भक्षितवान्।
(च) अत: भवन्त: यत्किमपि कार्यं कुर्वन्ति तत् विचारपूर्वकं कुर्वन्तु।

**7.** बुद्धिमानी से उपाय सोचना चाहिए तथा खतरे के बारे में भी सोचना चाहिए। देखो! मूर्ख बगुले के कारण, नेवले द्वारा सारे बगुले मारे गये।

❑

# 14. मूर्खः नृपः

## ❐ अभ्यासकंठी

**1.** (क) पक्षिपालक:, एकस्य नृपस्य
(ख) पक्षिपालकाय लक्ष्यरूप्यकाणि
(ग) बहुमूल्येन (घ) मूर्खत्वं

**2.** (क) **अर्थ**—शिकार
**वाक्य-प्रयोग**—हस्तिनापुरस्य राजा दुष्यन्त: आखेटायै वनं गतवान्।
(ख) **अर्थ**—राजा
**वाक्य-प्रयोग**—नृप: दरिद्राय दानं ददाति।
(ग) **अर्थ**—मनुष्य
**वाक्य-प्रयोग**—अयम् शुक: मनुष्य: इव वदति।

(घ) **अर्थ**—उत्तम

**वाक्य-प्रयोग**—संतोष उत्तम सुखः अस्ति।

(ङ) **अर्थ**—शासन से

**वाक्य-प्रयोग**—शासनेन शासितम्।

**3.** (क) धूर्तेन पक्षिपालकेन एकः शुकः मनुष्य इव वक्तुं शिक्षितः।

(ख) पक्षिपालकः तं शुकं एकस्य नृपस्य समीपम् अगच्छत्।

(ग) राजा तस्मै पक्षिपालकाय लक्षरूप्यकाणि ददौ।

(घ) विचार्य एव सर्वं कार्यं कर्त्तव्यम्।

**4.** स्वयं कीजिए।

❑

# 15. सर्वदमनो भरतः

## ❑ अभ्यासकंठी

**1.** (क) (ब) सिंहस्य (ख) (अ) मृत्तिकामयूरः (ग) (ब) रानी

(घ) (अ) सर्वदमनः

**2.** (क) बालः + अस्मिन् (ख) यदि + अस्य

(ग) तम् + अस्योपहर (घ) मम् + अम्बा

(ङ) सा + यत् (च) इह + ऐव

**3.**

| | मूलशब्द | विभक्ति | वचन |
|---|---|---|---|
| (क) | दन्त | द्वितीया | बहुवचन |
| (ख) | तद् | प्रथमा | द्विवचन |
| (ग) | अस्मद् | चतुर्थी | एकवचन |
| (घ) | युष्मद् | द्वितीया | एकवचन |
| (ङ) | राजा | द्वितीया | एकवचन |

**4.**

| | धातु | लकार | पुरुष | वचन |
|---|---|---|---|---|
| (क) | गण् | लृट् | उत्तम | एकवचन |
| (ख) | स्निह् | लृट् | प्रथम | एकवचन |
| (ग) | वत्सल | लृट् | प्रथम | एकवचन |
| (घ) | लङ्ध | लृट् | प्रथम | एकवचन |
| (ङ) | स्पृह | लट् | उत्तम | एकवचन |

**5.** (क) सर्वउद्धारः (ख) सिंहनी

(ग) पदं (घ) अशक्य

(ङ) निराकार (च) परगतम्

(छ) विषादः (ज)मुखकण्डी

6. (क) दुष्यन्तस्य (ख) पौरव
(ग) शकुन्तला (घ) सिंहस्य
(ङ) सर्वदमन:
7. (क) सर्वदमन: सिंहम् अवदत्—जृम्भस्व, रे सिंह!
जृम्भस्व, दन्तान् ते गणयिष्यामि।
(ख) तापसी अवदत्—किं न: अपत्यतुल्यानि सत्त्वानि विप्रकरोषि? हन्त। वर्धते इव ते संरम्भ:। स्थाने खलु ऋषिजनेन 'सर्वदमन:' इति नाम कृतम्!
(ग) शकुन्तलां दृष्ट्वा राजा अवदत्—अये। सेयम अत्रभवती शकुन्तला।
(घ) राजानं दृष्ट्वा द्वितीया तापसी तं अवदत्—भद्रमुख! एहि तावत्। मोचय, अनेन शिशुना बध्यमानं मृगेन्द्रम।
(ङ) सर्वदमनस्य जननी इहैव देवगुरो: तपोवने प्रसूता।
8. (क) मम् कुटीरे ऋषिकुमारनिर्मित: मृत्तिकामयूर: तिष्ठति।
(ख) मां त्यजतु। अहं मम् अम्बाया: समीपं गन्तुम् इच्छामि।
(ग) मम् भ्रम: आसीत्। एतदर्थं मां क्षमस्व।
(घ) अयं बालक: अतीव तेजस्वी पुरुषस्य पुत्र: इव दृश्यते।
(ङ) उत्थाय बालकम् अङ्के निवेश्य शकुन्तलां विलोकयति। ❑

# 16. अनुशासनस्य महत्त्वम्

## ❑ अभ्यासकंठी

1. (क) (अ) अनुशासनस्य (ख) (ब) मातापितरौ (ग) (स) सफलताम्
(घ) (ब) अव्यवस्था
2. (क) साम्राज्यम् (ख) गुरव: (ग) बाल्यकालात्
(घ) सामाजिक (ङ) कल्याणं
3. (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✗)
(घ) (✓)
4. (क) राष्ट्रेऽपि (ख) जीवनेऽपि (ग) कदापि
(घ) श्रेयोऽभिलाषिण: (ङ) विद्यार्थिन: (च) सर्वत्रैव
5. स्वयं कीजिए।
6. (क) गृहे मातापितरौ अनुशासनं कुरुत:।
(ख) सैनिकानां कृते तु अनुशासनस्य महती आवश्यकता वर्तते।
(ग) बाल्यकालात् एवं अनुशासनस्य अभ्यास: कर्त्तव्य:।
7. (क) अस्मिन् संसारे सर्वत्र एव अनुशासनस्य महत्त्वम् वर्तते।
(ख) ये छात्रा: गुरो: अनुशासने परिश्रमेण विद्याया: अध्ययनं कुर्वन्ति, ते भविष्यकाले सदा सफलतां प्राप्नुवन्ति।

(ग) यदि गुरवः विद्यालये अनुशासनं न कुर्वन्ति तर्हि विद्यार्थिनः उच्छृङ्खलाः भवेयुः।
(घ) बाल्यकालात् एवं अनुशासनस्य अभ्यासः कर्त्तव्यः।
(ङ) अनुशासितजनाः असफलतायाः मुखं न पश्यन्ति।
(च) श्रेयोऽभिलाषिणः जनाः सर्वदा अनुशासने तिष्ठेयुः।

**8.** (क) अनुशासनहीनता से छात्र उद्दंड हो जाते हैं।
(ख) यश चाहने वालों को सदैव अनुशासन में बैठना चाहिए।
(ग) अनुशासन से इस लोक का कल्याण होता है।
(घ) बचपन से ही अनुशासन का अभ्यास करना चाहिए।
(ङ) विद्याध्ययन के समय में तो अनुशासन का ही साम्राज्य है।

**9.** स्वयं कीजिए।

❑

# 17. गुरुभक्तिः

## ❑ अभ्यासकंठी

**1.** (क) आरुणि (ख) रुद्धोऽभवत् (ग) अधुना
(घ) आशीर्वादः

**2.** (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗)
(घ) (✓) (ङ) (✓)

**3.**

| | विभक्ति | वचन |
|---|---|---|
| (क) | प्रथमा | बहुवचन |
| (ख) | द्वितीया | बहुवचन |
| (ग) | तृतीया | एकवचन |
| (घ) | षष्ठी | एकवचन |

**4.** (क) महर्षिः धौम्यः आरुणिं आदिशत्—वत्स! केदारखण्डं बद्ध्वा रक्ष।
(ख) आरुणिः क्षेत्रे गत्वा सर्वान जल मार्गान मृत्तिकाया अबध्नात्।
(ग) जलस्य प्रवाहो।
(घ) गुरुः प्रीतोऽवदत्—वत्स! त्वं मम् अभूतपूर्वः शिष्यः।
कल्याणं ते भवतु। सर्वे वेदाः शास्त्राणि च तव प्रतिभान्तु।
अयं हि मम् आशीर्वादः।

**5.** (क) पुरा एकः धौम्यः नाम्नः महर्षिः आसीत्।
(ख) तस्य शिष्येषु एकः आज्ञाकारी शिष्यः आरुणि अपि आसीत्।
(ग) गुरुः क्षेत्रस्य मेषान् स्थूलं कर्तुं आरुणिं प्रेषितवान्।
(घ) मृत्तिकया जलस्य वेगं आरुणिः बन्धितुं न अपारयत्।
(ङ) गुरोः प्रसादेन आरुणिः सर्वाः विद्याः प्राप्तवान्।

**6.** (क) आप आज्ञा दें कि अब मैं क्या करूँ।
(ख) तुम्हारा कल्याण हो।
(ग) सारे वेद और शास्त्र तुम्हें प्रकाशित करें।
(घ) उसने कम समय में ही सारी विद्याएँ सीख लीं।

❑

# अर्द्धवार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

**1.** (क) (अ) मगधराज्ये (ख) (ब) कम्बुग्रीव: (ग) (ब) न हनिष्यामि
(घ) (अ) व्याध: (ङ) (ब) वृक्षम्

**2.** (क) गुजरातप्रदेशस्य नाडियाद (ख) नाडियाद
(ग) अङ्गलिमाल: (घ) प्रजा: (ङ) जालं

**3.** (क) फुल्ल + उत्पल (ख) अपाय: + अपि
(ग) उत् + डीयते (घ) सर: + तीरे
(ङ) न + अभिनन्दति

**4.** (क) $\rightarrow$ (iii) (ख) $\rightarrow$ (iv) (ग) $\rightarrow$ (v) (घ) $\rightarrow$ (i) (ङ) $\rightarrow$ (ii)

**5.** (क) वल्लभभाई पटेल महोदयस्य जन्म 1875 तमे ईसवीये वर्षे अक्टूबर-मासस्य 31 दिनाङ्के गुजरातप्रदेशस्य नाडियाद ग्रामे अभवत्।
(ख) वल्लभभाई पटेल महोदयस्य पितु: नाम झवेरभाई पटेल: मातु: च नाम लाऽबा आसीत्।
(ग) सम्पूर्ण: सृष्टि: चतुर्भागेषु विभक्त: अस्ति।
(घ) श्रवणकुमार: मातृ-पितृ सेवां करोति स्म।
(ङ) सरयूनद्या: तटे गच्छन् सुरभ्य वायुं प्राप्य सरयू नद्यास्तरंगध्वनिम् आकर्ण्य तौ पितरौ ज्ञायताम् यत् समीपस्थ: काऽपि नदी अस्ति।

**6.** (क) मगधराज्ये एकस्मिन् सरसि हंसौ निवसत:।
(ख) गोपालकानां वचनं श्रुत्वा कूर्म: मित्रेभ्य: दतं वचनं विस्मृतवान्।
(ग) सम्पूर्ण: संसार: चतुर्भागेषु विभक्त: अस्ति।
(घ) त्रेतायुगे मातृ-पितृभक्त: एक: बालक: आसीत्।
(ङ) आज्ञां प्राप्य श्रवणकुमार: जलम् आनेतुं नदीम् अगच्छत्।

**7.** (क) उसका नाम अंगुलिमाल था।
(ख) राजा ने उसको पकड़ने के बहुत प्रयास किये।
(ग) वृक्ष हमें विविध प्रकार के फल देते हैं।
(घ) वृक्ष कार्बन को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन देते हैं।
(ङ) इनमें कुछ वृक्ष विशालकाय होते हैं।

❑

# वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

**1.** (क) (अ) योगसिद्ध मुनि:  (ख) (स) विडालम्  (ग) (स) व्याघ्र:
(घ) (अ) इंदौर  (ङ) (स) द्वाऽपि सत्यम्

**2.** (क) भ्राता  (ख) गायने  (ग) जन्मसिद्ध:
(घ) शिक्षक:  (ङ) जननी

**3.** (क) → (iii) (ख) → (iv) (ग) → (v) (घ) → (i) (ङ) → (ii)

**4.** (क) पलक: मुछाल: इंदौर नगरे वसति।
(ख) तिस्र: वर्षात् पलक: मुछाल: यञ्चे गायनं करोति।
(ग) धूर्तेन पक्षिपालकेन एक: शुक: मनुष्य इव वक्तुं शिक्षित:।
(घ) पक्षिपालक: तं शुकं एकस्य नृपस्य समीपम् अगच्छत्।
(ङ) राजा तस्मै पक्षिपालकाय लक्षरूप्यकाणि ददौ।

**5.** (क) पलक मुछाल: इन्दौर-नगरे निवसति।
(ख) पलक मुछालस्य सुखी परिवार: अस्ति।
(ग) अनुशासनहीनता से छात्र उद्दंड हो जाते हैं।
(घ) यश चाहने वालों को सदैव अनुशासन में बैठना चाहिए।
(ङ) अनुशासन से इस लोक का कल्याण होता है।

**6.** (क) अनुशासनहीनता से छात्र उद्दंड हो जाते हैं।
(ख) यश चाहने वालों को सदैव अनुशासन में बैठना चाहिए।
(ग) अनुशासन से इस लोक का कल्याण होता है।
(घ) बचपन से ही अनुशासन का अभ्यास करना चाहिए।
(ङ) विद्याध्ययन के समय में तो अनुशासन का ही साम्राज्य है।

**7.** (क) संयोगम् + इव  (ख) इति + एवम्
(ग) सत्यम + अस्ति  (घ) महामण्डल + ईश्वर:
(ङ) इति + एताभ्याम्  (च) दीर्घ: + आयुषी:

❑